VISHVA–JYOTI R. N. NO. 1/57 ISSN 0505-7523
REGD. NO. PB-HSP-01
CURRENCY PERIOD: (1.1.2015 TO 31.12.2017)

६५, ६ सितम्बर –2016

विश्वज्योति

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

साधु आश्रम, होश्यारपुर

एक प्रति का मूल्य : १० रुपये

Scanned with CamScanner

आध्यात्मिक क्रान्तिवीर श्री कबीर साहेब

– डॉ० महेन्द्रकुमार अं.दवे

ईशा से ४८३ पूर्व शाक्यमुनि भगवान् बुद्ध, बौद्धधर्म के प्रवर्तक का महापरिनिर्वाण होने के उपरान्त बौद्धधर्म विरोधियों ने अपना सिर उठाया। बुद्ध द्वारा राष्ट्रियभाव, भाईचारा तथा प्रेम एवं मनु द्वारा प्रतिपादित वर्ग-व्यवस्था चार वर्णों में बटने के कारण नष्ट हो चुका था। छोटे-छोटे सामन्तों के उदय से भारत की राजनीति और सामाजिक स्थिति बुरी तरह प्रभावित हुई। मुस्लिम शासकों के राज्य बढ़ने लगे। भारतभूमि में जब-जब विपत्ति आती है तब-तब ईश्वरीय शक्ति किसी न किसी स्वरूप में अवरित हुई है। ईशा के बाद १३९८ में ज्येष्ठ पूर्णिमा को प्रकाश-पुञ्ज के रूप में क्रान्तिद्रष्टा निर्गुणी उपासक तत्त्वदर्शी हिन्दु-मुस्लिम एकता का नारा देने वाले सन्तों की श्रेणी में सन्त शिरोमणि कबीर साहेब ने काशी के पास लहर तालाब नामक स्थान पर नीरू-नीमा जुलाह दम्पत्ति के घर में जन्म लिया।

मध्यकाल अर्थात् भक्तिकाल में समाज अन्धविश्वास, छुआछूत, शोषण आदि सामाजिक बुराईयों से जकड़ा हुआ था। तब संत कबीर साहेब ने ढाई आखर प्रेम का कह कर मानवता को सच्चाई और भलाई का मार्ग दिखाया। निराकार प्रभुभक्ति, सत्संग और आत्मज्ञान के बल पर सामाजिक विषमताओं का उन्मूलन करने के लिये सात्विक कर्म की प्रधानता और मानवता की भावना पर जोर देते हुये अपनी खड़ी बोली द्वारा जन-जन को आत्मकल्याण और मानवता के उद्धार का संदेश दिया। धर्म को सर्वोपरि मानते हुए कहते हैं कि-

कबीर जब हम पैदा हुये, जग हंसा हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो कि हम हंसे जग रोये।।

श्री आर.के. वर्मा कबीर को हिन्दुधर्म को बचाने वाला मानते हैं। वे मानते हैं कि कबीर जैसे महान् रहस्यवादी के उपदेश से हिन्दुओं में ताकत आयी थी और हिन्दु लोग मुस्लिम धर्म को अंगीकार करने से रुक गये थे। कबीर जी के ही कारण हिन्दुओं में बड़ी ताकत भी उत्पन्न हुई थी।[१] बिशप वेस्कोट अपने ग्रन्थ में

१.A Weaver Named Kabir , श्री आर.के.वर्मा, पान नं. ३३

कबीर को पंदरमी सदी के भारतीय ल्युथर मानते हैं।[२] बिशप वेस्कोट कबीर का अरबी अर्थ 'महान्' मानते हैं और कुरान में अल्लाह के ९९ नामों में से एक 'अल कबीर' होने का भी उल्लेख करते हैं।

पंजाब में पंच में सिख गुरु अर्जुन देव ने 'गुरुग्रन्थ' की रचना ई०स०१६०४ में की है इसमें कबीर के पदों की संख्या ज्यादा थी। अबुल फजल 'आईन-ए-अकबरी में नोंधते है कि कबीर जी के देहविलय के समय हिन्दू उनको अग्निदाह देने को सोचते थे और मुस्लिम दफनाने की माँग करते थे। कबीर के ऐसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में भारत की कौमी समस्या समझना कठिन है। धर्म एवं कर्म क्षेत्र में जो कठिनाईयां दिखाई पड़ती हैं उसका वर्णन कबीर जी की आध्यात्मिक क्रान्ति में दिखाई पड़ता है। भक्ति और क्रान्ति एक व्यक्ति में संगृहित होने से ही कबीर जैसे क्रान्तिवीर पैदा होते हैं। कबीर जी में भक्ति की शीतलता और क्रान्ति की उष्णता दिखाई देती है। जैसे कि -

कबीर खड़ा बाजार में, लियो टकूटी हाथ
जो घर फूंके अपना, चले हमारे साथ।

कबीर जी की धारणा के अनुसार व्यक्ति जन्म से नहीं किन्तु कर्म से महान् है वो कहते हैं कि-

जाति न पूंछो साध को पूंछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान।।

कबीर जी का धर्म सच्चा मानवधर्म था। वे मनुष्य से अधिक किसी को नहीं मानते। कबीर जी सेक्युलर थे। राम-रहीम को एक ही परमतत्त्व के दो नाम मानते थे। रूढ़िगत धार्मिक सिद्धान्तों और सामाजिक अन्धविश्वासों का खोखलापन दिखलाकर मानवता के विकास के लिये समाज को निर्भीक होकर फटकारा। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता का नारा देने वाले पहले भारतीय सन्त थे। धर्मनिरपेक्षता के लिये वे कहते हैं कि-

मस्जिद मुल्ला बांग पुकारे,
क्या मेरा साहिब बहरा है?
चींटी के पाँव में नेपूर बाजे,
वो भी मेरा साहिब सुनता है।।

वे सभी प्रकार की हिंसा के विरोधी थे। धर्मान्धता उनके शब्दकोष में भी नहीं है। वे कहते थे कि-

पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं गिरिराय।
सबसे तो चक्की भली, किपिस पिस के खाय।।

वे कहते हैं कि 'पत्थर पूजने से भगवान् मिलते होंगे तो पूरा पर्वत को ही पूजता हूं, क्यों छोटी-सी मूर्ति की पूजा करूं ? उससे तो

२. Kabir & the Kabir Panthis

Scanned with CamScanner

चक्की अच्छी है कि जिस को घिसड़ते आटा तो मिले, कबीर जी कहते हैं कि 'ये दुनिया तो अजीब- सी है, सच बोलेंगे तो मारने के लिये धसेंगी और झूठ बोलेंगे तो मान जायेगी। कबीर जैसा निर्भीक सन्त भारत में न हुआ है न होगा। उन्होंने अपने विचारों का प्रचार-प्रसार काव्य के माध्यम से ही किया। उनका काव्य सभी जनों में व्याप्त और ग्राह्य बन गया था। कबीर की दर्द वाली पंक्तियां मानव की जड़ता पर कटाक्ष करती हैं, कबीर जी कहते हैं कि-

सुखिया सब संसार है, खावैं और सोवैं।
दु:खिया दास कबीर, जागैं और रोवैं।।

गीता के सहज कर्म की महिमा को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि- **कहै कबीर अस उद्यम कीजे। आप जीये ओरन को दीजे।**

कबीर जी निर्गुण उपासक थे। उन्होंने मूर्तिपूजा का खुलकर विरोध किया साथ ही हिन्दू-मुस्लिम धर्मों में व्याप्त आडम्बरों और पाखंडों का कठोरता से विरोध किया-

कंकर पत्थर जोड़के मस्जिद लई बनाय।
ता चढि मुल्ला बाग दे, का बेरा हुआ खुदाय।।

उन्होंने गृहस्थ जीवन को सुधारने के लिये संतोष और शील का उपदेश दिया है। उनके अनुसार आन्तरिक आनन्द के आगे संसार के भोग फीके हो जाते हैं-

मन मथुरा दिल द्वारिका, काया काशी जाणि।
दसवां द्वार देहरा, तामे ज्योति पिछाणि।।

वर्तमान में लोग धर्म के नाम पर हुल्लड़ कर रहे हैं। कबीर जी की पंक्ति में सच्चे मंगल ध्वनि सुनाई पड़ते हैं-

मोको कहां ढूंढे बन्दे, मैं तो मेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौनो क्रियाकर्म में, नहीं योग वैराग्य में।
खोजी होय तो तुरते मिलिहो, पल भरकी तालास में।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसो की स्वाँस में।

वे मानते हैं कि सबमें राम विराजमान हैं इसके लिये मस्जिद-मन्दिर में जाने की क्या आवश्यकता है। ब्रह्म का तो कोई स्वरूप ही नहीं है यथा-

कस्तुरी कूण्डल बसै, मृग ढूंढे बन माहिं।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं।।

संसार में माया तत्त्व ज्यादा बढ़ रहा है। वह विश्वमोहिनी के रूप में जीवों को ठगकर कुशलता से अपना जाल फैलाती है और जीवों को पतन की ओर उन्मुख करती है यथा-

माया महा ठगिनी हम जानी।
तिरगुन फांस लिये कर डोले बोले मधुर बानी।
कबीर माया मोहिनी, जैसी मीठी खांड।।

कबीर जी मानवधर्म के उपासक थे। धर्म-सुधार की क्रान्ति उनमें व्याप्त थी। हिन्दू विचारधारा के वे उपासक थे। उनमें श्रीराम की महिमा अपरंपार थी-

बाहेर भीतर राम हैं, नेनन का अभिराम।
जित देखुं तित राम हय राम बीना नहीं ठाम।।
सभी मन्त्रका बीज हय, रामनाम तत सार।
जे को जन हिरदें गरे, सु जन उतरे पार।।

कबीर साहब के कई विचार गांधी जी ने भी अपनाये। जैसे कि धर्मसुधारकता, भारतीय संस्कृति उपासकता, रामभक्ति, धर्मसहिष्णुता, उद्यमशीलता, देशभक्ति, नीतिमत्ता आदि। कबीर जी को मुसलमानों ने पीर मानकर 'कबीरशाह' कहा है। तो वैष्णव भक्तों ने उनको भक्त मानकर 'कबीरदास' कहा। कबीर को समझने में हम सभी निष्फल हैं उनका दर्द उनकी पंक्तियों में प्रकट हुआ है-

अरे ईन दुहु राह न पाई।
हिन्दु की हिन्दवाई देखी,
तुर्कन की तुर्काई।
कहैं कबीर सुनों भाई साधो,
कौन राह ह्वै जाई।।

वे कहते हैं कि 'दोनों को मार्ग मिला नहीं है। हिन्दुत्व का हिन्दुत्व देख लिया और मुसलमान की मुसलमानी देख ली, हे साधो! मैं अब कौन से रास्ते पे जाऊं ? वे हिन्दु और मुस्लिम दोनों को कहते हैं कि आप दोनों मेरी बात को मान लो-

हिन्दु तुर्कहि मिलके, मानहु वचन हमार।
आदि अंत औ युग-युग, देखहू दृष्टि प्रसार।।

कबीर जी ने धर्म को बाह्याचार मानने वालों को फटकारते हुए कहा है कि-

काशी काठैं घर करे, पीवै निरमल नीर।
मुक्ति नहीं हरि नांउ बिनु, यौं कहे दास कबीर।।

उन्होंने हरिनाम स्मरण का भी महत्त्व स्वीकारा है। वे कहते हैं कि-

मथुरा जावै द्वारिका, भावै जावे जगन्नाथ।
साध-संगति हरिभजन बिन, कुछन आवेहाथ।।

भारतीय धर्म के उपासक एवं सुधारक कबीर में अद्‌भुत शक्ति थी। यदि कबीर जी नहीं होते तो उनके बिना भारत का इतिहास अधूरा रहता। क्योंकि वे समन्वयी संस्कृति के प्रतीक हैं। अन्त में कबीर साहब की ही पंक्तियों से उनको भावभरी श्रद्धांजलि है-

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहिम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।।

श्री सोमनाथ, एसोसियेट प्रोफेसर,
साहित्य विभाग, संस्कृत यूनिवर्सिटी, वेरावल (गुजरात)

Scanned with CamScanner